जल का संदेश

रिमझिम-रिमझिम बरस रहा है,
कल कल करता बहता
समझो इसको देश वासियों,
क्या तुमसे यह कहता।

चलना इसका धर्म, स्थिरता इसे नहीं भाती है।
तुम भी चलते रहो,
धार बस गीत यही गाती है।
विभिन्न रास्तों से होकर,
जब एक धार बनती है।
बड़े-बड़े पर्वत खण्डों को बहा चूर्ण करती है।

विकट समस्या पर्वत जैसी,
समाधान पाना है।
बिखरो नहीं एक हो जाओ,
जल से ये जाना है।

बांध बनाकर रोका जल को,
ऊपर उठता जाता है।
गिरकर बना रहा है विद्युत,
हमको यह समझाता है।

डरो नहीं नीचे होने से
यदि काम देश के आओ
पर-हित बलिदानी बन
मां का गौरव मान बढ़ाओ।
बलिदानों से ही धरती,
ज्योतिर्मय बन जाती है-
जग आलोकित करते जल का
यह संदेश दूर दूर तक फैलाओ ।

मुकेश कुमार शर्मा, अवर अभियन्ता (सिविल)